डॉ. प्रीति सिंह

जन्म – ब्यावर (राजस्थान)
शिक्षा – प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, एम.ए., एम.फिल., भाषा भवन, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
शोधकार्य – विद्या वाचस्पति, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति)
लेखन कार्य – विभिन्न शोध पत्र–पत्रिकाओं में शोधपत्र प्रकाशित

दयानन्द कॉलेज अजमेर
विद्या परम् दैवतम्
Estd. 1942

कविता शर्मा, सहायक आचार्य | डॉ. रफीक खान, सहायक आचार्य | अनु शर्मा, सहायक आचार्य | भारत भूषण शर्मा, सहायक आचार्य | प्रदीप ..., सहायक आचार्य

दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर

(महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से सम्बद्ध)

www.davajmer.org

ISBN 978-93-...

अभिनव प्रकाशन
www.abhinavprakashan.com

हिन्दी भाषा की समृद्धि : छायावादी साहित्य

100 वर्ष छायावाद

राष्ट्रीय संगोष्ठी विशेषांक

(राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी)

प्राचार्य एवं संरक्षक
डॉ. लक्ष्मीकांत

सम्पादक
डॉ. प्रीति सिंह

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर
(... विश्वविद्यालय, अजमेर से सम्बद्ध)

संगोष्ठी की झलकियाँ

हिन्दी भाषा की समृद्धि : छायावादी साहित्य

सम्पादक
डॉ. प्रीति सिंह
दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर

369

अभिनव प्रकाशन, अजमेर

ISBN : 978 - 93 - 84189 - 83 - 9

✦ सर्वाधिकार सुरक्षित

✦ प्रथम संस्करण : 2019
✦ मूल्य : एक सौ पिच्यानवें रुपये मात्र
✦ प्रकाशक : अभिनव प्रकाशन
प्रथम मंजिल, 56, कचहरी रोड,
अजमेर - 305001
मो. नं. : 9460900527
✦ Website : www.abhinavprakashan.com
✦ E-mail : abhinav_prakashan@yahoo.in
✦ मुद्रक : ओम श्रीविनायक, अजमेर
✦ लेजर टाईप सेटिंग : श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

HINDI BHASHA KI SAMRDHI : CHHAYAWADI SAHITYA
- By Dr. Priti Singh
Rs. 195/-

प्राचार्य की कलम से.....

महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में ''हिन्दी भाषा की समृद्धि: छायावादी साहित्य'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन छायावाद के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में किया गया। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल की काव्यधारा छायावाद का विकास द्विवेदी युगीन कविता के पश्चात् हुआ। छायावाद में वर्णित अध्यात्म, दर्शन, प्रेम, सौन्दर्य, नारी के प्रति उदात्तभाव, उच्च नैतिक मूल्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्ण रुपेण प्रासंगिक हैं। हिन्दी के मूर्धन्य कवियों ने छायावाद को न केवल अपनी कविता से समृद्ध किया, अपितु अपने गद्य साहित्य से भी इसे वैभवशाली बनाया है।

इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य उस कालखण्ड के दौरान रचे गए साहित्य को उसकी सम्पूर्णता में देखना एवं उसकी प्रासंगिकता के साथ-साथ उससे जुड़ी हुई तमाम जिज्ञासाओं के समाधान की कोशिश करना है। निश्चित रूप से यह संगोष्ठी अपने इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल रही है। यह संगोष्ठी हिन्दी साहित्य के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए छायावाद से सम्बन्धित उनके शोध कार्य में सहायक सिद्ध होगी। यही हमारा लक्ष्य एवं प्रयोजन है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए आयोजन सचिव एवं समस्त सदस्यगणों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

डॉ. लक्ष्मीकांत
प्राचार्य
दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर।

अनुक्रमणिका

			पृ.सं.
1.	भावलोक की सत्ता के अनुभव की अभिव्यक्ति : छायावादी कविता	डॉ. नवीन नन्दवाना	1
2.	हिन्दी साहित्य की श्री समृद्धि में छायावाद का स्थान	डॉ. सविता पारीक	24
3.	व्यष्टि में समष्टि का प्रतिबिम्ब – छायावाद	शेफाली मार्टिन	28
4.	महादेवी से मीरा तक	डॉ. के.के. शर्मा	36
5.	छायावाद – अन्तर्जगत् की सूक्ष्म यात्रा	डॉ. शमा खान	43
6.	कविता के आँचल में झिलमिलाते कल्पना तत्त्व (संदर्भ–छायावादी कवि–चतुष्टय)	डॉ. विमलेश शर्मा	47
7.	छायावादी कवियों में शब्द–सौष्ठव एवं अर्थ–गौरव का चरम : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	डॉ. के आर. मह्रिया	56
8.	युगप्रवर्तक निराला	डॉ. दीपाली शर्मा	63
9.	छायावाद शब्द शिल्पी : सुमित्रानंदन पंत	डॉ. महीपाल सिंह राठौड	69
10.	छायावादी काव्य में नारीवादी दृष्टिकोण	प्रतिमा खटुमरा	76
11.	छायावाद के गौण कवियों का योगदान	डॉ. शची सिंह	83
12.	छायावाद और नारी	डॉ रेखा सिंह श्रीमती कविता शर्मा श्रीमती उन्नति शर्मा	87
13.	महादेवी वर्मा के स्त्री मन की संवेदनशीलता का प्रवासी लेखिकाओं के साहित्य पर प्रभाव	चंचल मेहरा	93
14.	इतिहास में छायावाद की भूमिका	प्रदीप कसोटिया	99
15.	छायावाद शब्द शिल्पी : सुमित्रानन्दन पंत	पिंकी खटनाल	103
16.	छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना और निराला कृत उपन्यास– 'पारिजात'	सन्तरा मीणा	108
17.	प्रकृति के चितेरे कवि–सुमित्रानंदन पंत	डॉ. प्रीति सिंह	113
18.	निराला का उपन्यास 'कुल्ली भाट'	रेखा पाण्डेय	116

भावलोक की सत्ता के अनुभव की अभिव्यक्ति : छायावादी कविता

डॉ. नवीन नन्दवाना
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
(राजस्थान) 313001

हिंदी में छायावाद का आगमन आधुनिक हिंदी कविता के लिए एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुआ। द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता और कविता लेखन के लिए तय किए गए विविध मानदंडों के कारण रचनाकारों ने एक विशेष प्रकार का बंधन महसूस किया। सन् 1918 तक आते-आते कविता में प्रेम, सौंदर्य, कल्पना, वेदना, करुणा और मानवीकरण आदि को कविता का विषय बनाया जाने लगा। हिंदी में छायावाद की ये काव्य-प्रवृत्तियाँ 1918 के आसपास से दिखाई देने लगी किंतु वास्तव में छायावादी रचनाओं के लिए यह नाम सन् 1920 के लगभग तब निश्चित हुआ जब मुकुटधर पांडेय के चार लेख जबलपुर से निकलने वाली 'श्रीशारदा' पत्रिका में 'हिंदी में छायावाद' शीर्षक से प्रकाशित हुए। प्रारंभ में छायावाद शब्द भले ही विविध विद्वानों द्वारा इसकी आलोचना करते हुए रखा हो किन्तु कालांतर में यही नाम इस प्रकार की रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हो गया और आज भी हिंदी जगत में इस काल की रचनाओं को छायावादी रचनाओं के नाम से जाना जाता है।

छायावाद को विभिन्न विद्वानों ने विविध प्रकार से परिभाषित करते हुए समझाने का कार्य किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे 'चित्रभाषा या अभिव्यंजन पद्धति' मानते हुए लिखते हैं कि- ''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है। छायावाद का सामान्यतः अर्थ हुआ- ''प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन।''[1] दूसरे अर्थ में उन्होंने छायावाद को चित्र-भाषा-शैली कहा है। नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद पर विचार करते हुए कहा कि- ''मानव अथवा